6. दशवैकालिक ग्रन्थ के अनुसार जीवन में करुणा का महत्त्व बताइए।

7. लज्जावग्ग के अनुसार सज्जन व्यक्ति की विशेषताएँ बताइए।

8. आचार्यकुन्दकुन्द का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

9. रोहिणीणाए का कथासार लिखिए।

खण्ड—स **2×20=40**

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **500** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का है।

10. आचारांग के आधार पर जीवन के सार का वर्णन कीजिए।

11. लज्जावग्ग में उल्लेखित जीवनमूल्यों का वर्णन कीजिए।

12. अष्टपाहुड में उल्लेखित आठ पाहुडों का विवेचन कीजिए।

13. सुसुरगेहवासीणं चउजामायराणं कहा के आधार पर दामादों के आसक्ति के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

DPL–02

June – Examination 2023

Diploma in Prakrit Language Examination

प्राकृत गद्य-पद्य

Paper : DPL-02

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ', 'ब' और 'स' तीन खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—अ **10×2=20**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है।

1. (i) समणसुत्त में कुल कितनी गाथाएँ हैं ?

   (ii) आचारांग के अनुसार सब प्राणियों को क्या प्रिय होता है ?

   (iii) दशवैकालिक ग्रन्थ किस भाषा में लिखा गया है ?

(iv) वग्ग किसे कहते हैं ?

(v) गउडवहो किस छन्द में लिखा गया है ?

(vi) भगवती आराधना में कुल कितने अधिकार हैं ?

(vii) अष्टपाहुड का समय क्या है ?

(viii) मणिराम नामक पात्र किस ग्रन्थ में है ?

(ix) राजगृह नगर में किस नाम का सार्थवाह निवास करता था ?

(x) लिंगपाहुड क्या है ?

खण्ड—ब **4×10=40**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है।

2. निम्नलिखित में से किसी **एक** गद्य की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

एवं जाणित्तु दुक्खं पत्तेयं सातं अणभिक्कंतं च खलु वयं सपेहाए खणं जाणाहि पंडिते! जाव सोतपण्णाणा अपरिहीणा जाव णेत्तपण्णाणा अपरिहीणा जाव घाणपण्णाणा अपरिहीणा जाव जीहपण्णाणा अपरिहीणा जाव फासपण्णाणा अपरिहीणा, इच्चेतेहिं विरूवरूवेहिं पण्णाणेहिं अपरिहीणेहिं आयट्ठं सम्मं समणुवासेज्जासि त्ति बेमि।

अथवा

तेहिं जामायरेहिं पायत्तिगं वाइअं पि खज्जरसलुद्धत्तणेण तओ गंतुं नेच्छंति। ससुरो वि चिंतेइ— 'कहं एए नीसारिअव्वा ? साउभोयणरया एए खरसमाणा माणहीणा संति, तेण जुत्तीए निक्कासणिज्जा।' पुरोहिओ नियं भज्जं पुच्छइ—एएसिं जामाऊणं भोयणाय किं देसि ?' सा कहेइ—

'अइप्पियजामायराणं तिकालं दहि—घय—गुडमीसिअमन्नं पक्कन्नं च सएव देमि।' पुरोहिओ भज्जं कहेइ—अज्जयणाओ आरब्भ तुमए जामायराणं वज्जकुडो थूलो रोट्टगो घयजुत्तो दायव्वो।

3. निम्नलिखित में से किसी **एक** पद्य की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

जा जा वज्जई रयणी, न सा पडिनियत्तई।

अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जन्ति राइओ॥

अथवा

जे गुणे से मूलट्ठाणे, जे मूलट्ठाणे से गुणे।

इति से गुणट्ठी महता परितावेण वसे पमत्ते।

4. समणसुत्त के द्वितीयखण्ड मोक्षमार्ग का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

5. उत्तराध्ययन के अनुसार प्रमाद के दुष्प्रभाव को स्पष्ट कीजिए।